INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 11, Issue: 3 | July – September 2024

किशोरों में मूल्य और नैतिकता का विकास

डॉ. राजेश कुमार यादव
सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राम रतन पीजी कॉलेज रामपुर मंसूर गंज पनियरा महराजगंज उत्तर प्रदेश (भारत)

डॉ0 मयंक कुशवाहा
प्रभारी– समाजशास्त्र विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर– उत्तर प्रदेश (भारत)

सार
किशोरावस्था वह समय है जब एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, मूल्य और नैतिकता का निर्माण होता है। यह वह दौर है जब किशोर अपने परिवेश, शिक्षा और समाज से विभिन्न मान्यताओं और मूल्यों को आत्मसात करते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में मूल्य और नैतिकता के विकास को समझना है। यह अध्ययन उन विभिन्न कारकों की पहचान करता है जो किशोरों में मूल्य और नैतिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे परिवार, शिक्षा, समाज और मीडिया। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन किशोरों में नैतिकता और मूल्यों के विकास के लिए प्रभावी शिक्षण विधियों और रणनीतियों का भी सुझाव देता है।
मुख्य शब्दः किशोरावस्था, मूल्य, नैतिकता, शिक्षा, परिवार, समाज, मीडिया, व्यक्तित्व विकास, शिक्षण विधियाँ, सामाजिक प्रभाव।

परिचय
किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील चरण है जिसमें व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास होता है। इस दौरान किशोर अपने परिवेश, शिक्षा, और समाज से विभिन्न मान्यताओं और मूल्यों को आत्मसात करते हैं, जो उनके व्यक्तित्व और नैतिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
मूल्य और नैतिकता किसी भी समाज की नींव होते हैं, और इन्हें किशोरों में प्रारंभिक अवस्था में विकसित करना आवश्यक है। यह केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए ही नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए भी महत्वपूर्ण है। मूल्य और नैतिकता एक व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने में सहायता करते हैं, और उन्हें नैतिक रूप से सही निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।
किशोरों में मूल्य और नैतिकता का विकास कई कारकों पर निर्भर करता है, जैसे परिवार, शिक्षा प्रणाली, सामाजिक परिवेश, और मीडिया। परिवार और विद्यालय प्रारंभिक मूल्य और नैतिकता का पहला स्रोत होते हैं, जबकि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश और मीडिया का प्रभाव किशोरों की सोच और दृष्टिकोण पर व्यापक प्रभाव डालता है।
इस अध्ययन का उद्देश्य इन सभी कारकों का विश्लेषण करना और यह समझना है कि कैसे वे किशोरों में मूल्य और नैतिकता के विकास में योगदान देते हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन उन रणनीतियों और तरीकों की पहचान करेगा जो मूल्य और नैतिकता के प्रभावी शिक्षण में सहायक हो सकते हैं।
कुल मिलाकर, यह अध्ययन समाज के उन विभिन्न पहलुओं को उजागर करेगा जो किशोरों में मूल्य और नैतिकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और यह सुझाव देगा कि कैसे इन पहलुओं को बेहतर तरीके से उपयोग करके एक नैतिक और मूल्यवान समाज का निर्माण किया जा सकता है।

पारिवारिक प्रभाव
परिवार किसी भी व्यक्ति के जीवन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक समूह होता है। किशोरों के मूल्य और नैतिकता के विकास में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्य किशोरों के पहले शिक्षक होते हैं, और वे अपने आचरण, व्यवहार और मूल्यों के माध्यम से

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 11, Issue: 3 | July – September 2024

किशोरों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। परिवार के विभिन्न पहलुओं का मूल्य और नैतिकता के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. मूल्य और नैतिकता का प्रत्यक्ष शिक्षण:
- माता–पिता और अभिभावक बच्चों को सीधे रूप से नैतिक और मूल्यवान शिक्षा प्रदान करते हैं। वे उन्हें ईमानदारी, सम्मान, सहानुभूति, और सामाजिक जिम्मेदारियों के महत्व को समझाते हैं।
- यह शिक्षण अक्सर कहानियों, व्यक्तिगत अनुभवों, और दैनिक जीवन के उदाहरणों के माध्यम से होता है।

2. मॉडलिंग और अनुकरण:
- बच्चे अपने माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार का अनुकरण करते हैं। यदि माता–पिता नैतिक और मूल्यवान व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं, तो बच्चे भी ऐसे ही व्यवहार को अपनाने की संभावना रखते हैं।
- उदाहरण के लिए, यदि परिवार में ईमानदारी, सहयोग और सहानुभूति को महत्व दिया जाता है, तो बच्चे भी इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं।

3. परिवार का वातावरण:
- परिवार का वातावरण बच्चों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक सकारात्मक, सहायक और स्नेही पारिवारिक वातावरण बच्चों को नैतिक और मूल्यवान बनने में सहायता करता है।
- इसके विपरीत, तनावपूर्ण, विवादपूर्ण और उपेक्षात्मक वातावरण नैतिक और मूल्य विकास में बाधा डाल सकता है।

4. अनुशासन और नियम:
- परिवार में स्थापित अनुशासन और नियम भी बच्चों के मूल्य और नैतिकता को आकार देते हैं। अनुशासन के माध्यम से बच्चे सही और गलत के बीच अंतर करना सीखते हैं।
- माता–पिता का बच्चों के प्रति सुसंगत और न्यायपूर्ण व्यवहार उन्हें नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन करता है।

5. संचार और संवाद:
- परिवार में खुला और ईमानदार संवाद बच्चों के नैतिक विकास में सहायक होता है। बच्चे जब अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त कर सकते हैं, तो वे नैतिकता और मूल्यों को बेहतर तरीके से समझते हैं।
- माता–पिता का बच्चों के साथ नियमित संवाद उन्हें नैतिक मुद्दों पर विचार करने और समझने में सहायता करता है।

6. धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ:
- परिवार की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ भी बच्चों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ बच्चों को नैतिक और मूल्यवान जीवन जीने की दिशा में मार्गदर्शन करती हैं।

उपसंहार: कुल मिलाकर, परिवार का किशोरों के मूल्य और नैतिकता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली योगदान होता है। माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्य अपने आचरण, शिक्षण और समर्थन के माध्यम से बच्चों को नैतिक और मूल्यवान जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि परिवार अपने बच्चों को सकारात्मक और नैतिक वातावरण प्रदान करे, ताकि वे समाज के अच्छे और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

शिक्षा और नैतिक शिक्षा

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 11, Issue: 3 | July – September 2024

शिक्षा किशोरों के नैतिक और मूल्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यालय, शिक्षक, पाठ्यक्रम और सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ बच्चों में नैतिक और मूल्यवान आचरण को विकसित करने में सहायक होते हैं। नैतिक शिक्षा के माध्यम से किशोर सही और गलत के बीच अंतर करना, नैतिक निर्णय लेना, और समाज में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में योगदान करना सीखते हैं। शिक्षा और नैतिक शिक्षा के प्रभाव को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री:
- नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। नैतिक कहानियाँ, जीवनी, ऐतिहासिक घटनाएँ, और साहित्यिक कृतियाँ बच्चों को नैतिक मूल्यों को समझने और आत्मसात करने में सहायता करती हैं।
- विज्ञान, समाजशास्त्र और इतिहास जैसे विषयों में नैतिक दुविधाओं और निर्णयों पर चर्चा करना बच्चों में नैतिक सोच को बढ़ावा देता है।

2. शिक्षकों की भूमिका:
- शिक्षक बच्चों के जीवन में महत्वपूर्ण मार्गदर्शक होते हैं। उनके व्यवहार, शिक्षण शैली, और नैतिक मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण बच्चों पर गहरा प्रभाव डालते हैं।
- शिक्षक बच्चों के नैतिक विकास के लिए मॉडलिंग करते हैं, और वे नैतिक मुद्दों पर चर्चा और संवाद को प्रोत्साहित करते हैं।

3. सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ:
- सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ, जैसे नाटक, वाद–विवाद, सामुदायिक सेवा, और खेलकूद, बच्चों में नैतिकता और मूल्यवान आचरण को बढ़ावा देती हैं।
- ये गतिविधियाँ बच्चों को टीम वर्क, नेतृत्व, ईमानदारी, और सहानुभूति के महत्व को समझने और अभ्यास करने का अवसर प्रदान करती हैं।

4. नैतिक दुविधाओं पर चर्चा:
- नैतिक दुविधाओं पर चर्चा बच्चों के नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करने में सहायक होती है। ये चर्चाएँ बच्चों को विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने, तर्कसंगत निर्णय लेने, और नैतिकता के महत्व को पहचानने में मदद करती हैं।
- शिक्षक कक्षा में नैतिक मुद्दों पर खुली चर्चा को प्रोत्साहित करके बच्चों को नैतिक सोच और मूल्यवान आचरण की दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं।

5. सकारात्मक विद्यालय वातावरण:
- विद्यालय का वातावरण बच्चों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक सकारात्मक, सहायक और स्नेही विद्यालय वातावरण बच्चों को नैतिक और मूल्यवान बनने में सहायता करता है।
- विद्यालय में सम्मान, सहयोग, और निष्पक्षता को प्रोत्साहित करने वाले नियम और नीतियाँ बच्चों के नैतिक विकास को बढ़ावा देती हैं।

6. मूल्य आधारित शिक्षा कार्यक्रम:
- मूल्य आधारित शिक्षा कार्यक्रम, जैसे नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम, जीवन कौशल कार्यक्रम, और सामाजिक–भावनात्मक शिक्षा, बच्चों में नैतिकता और मूल्यों को सिखाने में सहायक होते हैं।
- ये कार्यक्रम बच्चों को नैतिक मुद्दों पर विचार करने, नैतिक निर्णय लेने, और नैतिक आचरण को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

7. मूल्य और नैतिकता के मॉडल:
- विद्यालय में नैतिकता और मूल्यों के मॉडल, जैसे शिक्षक, वरिष्ठ छात्र, और सामुदायिक नेता, बच्चों को प्रेरित करते हैं और उन्हें नैतिक आचरण के महत्व को समझने में सहायता करते हैं।

उपसंहारः शिक्षा और नैतिक शिक्षा किशोरों के नैतिक और मूल्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से बच्चे नैतिक सोच, नैतिक निर्णय लेने की क्षमता, और नैतिक आचरण को समझते और अपनाते हैं। विद्यालय, शिक्षक, पाठ्यक्रम, और सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ बच्चों को नैतिक और मूल्यवान जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए, ताकि समाज में नैतिक और जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण हो सके।

सामाजिक प्रभाव

किशोरों के मूल्य और नैतिकता के विकास में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज के विभिन्न घटक, जैसे सामाजिक मान्यताएँ, मित्र मंडली, समुदाय, और मीडिया, किशोरों की सोच, दृष्टिकोण, और व्यवहार पर गहरा प्रभाव डालते हैं। सामाजिक प्रभाव के विभिन्न पहलुओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. सामाजिक मान्यताएँ और परंपराएँ:

- समाज की मान्यताएँ और परंपराएँ किशोरों के नैतिक और मूल्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। समाज में व्याप्त नैतिक मानदंड और मूल्य किशोरों को सही और गलत के बीच अंतर करने में सहायता करते हैं।
- धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक परंपराएँ किशोरों को नैतिकता और मूल्यों का महत्व समझाने में मदद करती हैं।

2. मित्र मंडली और साथियों का प्रभावः

- किशोरों के जीवन में उनके साथियों और मित्र मंडली का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। वे अपने मित्रों से नैतिकता और मूल्यवान आचरण को सीखते हैं और उन पर अमल करते हैं।
- साथियों के समूह में स्वीकृति पाने की इच्छा किशोरों को नैतिक और अनैतिक दोनों प्रकार के आचरण की ओर प्रेरित कर सकती है। इसलिए, सकारात्मक मित्र मंडली का महत्व बहुत अधिक होता है।

3. समुदाय और सामुदायिक कार्यक्रमः

- सामुदायिक कार्यक्रम और संगठन, जैसे युवा क्लब, सामाजिक संगठन, और सामुदायिक सेवा कार्यक्रम, किशोरों को नैतिक और मूल्यवान जीवन जीने की दिशा में प्रेरित करते हैं।
- सामुदायिक सेवा गतिविधियाँ, जैसे वृद्धाश्रम की देखभाल, स्वच्छता अभियान, और रक्तदान शिविर, किशोरों में सामाजिक जिम्मेदारी और सहानुभूति की भावना को विकसित करती हैं।

4. मीडिया का प्रभावः

- मीडिया, जैसे टेलीविजन, फिल्में, सोशल मीडिया, और इंटरनेट, किशोरों की नैतिकता और मूल्य पर व्यापक प्रभाव डालते हैं। मीडिया में प्रदर्शित नैतिक और अनैतिक आचरण किशोरों की सोच और दृ ष्टिकोण को प्रभावित करता है।
- सकारात्मक मीडिया सामग्री, जैसे नैतिक कहानियाँ, प्रेरणादायक फिल्में, और शैक्षिक कार्यक्रम, किशोरों में नैतिकता और मूल्यों का विकास कर सकती हैं। वहीं, नकारात्मक मीडिया सामग्री, जैसे हिंसात्मक और अश्लील सामग्री, किशोरों की नैतिकता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।

5. सामाजिक घटनाएँ और आंदोलनों का प्रभावः

- सामाजिक घटनाएँ और आंदोलनों, जैसे पर्यावरण संरक्षण आंदोलन, महिला सशक्तिकरण अभियान, और मानवाधिकार आंदोलन, किशोरों में नैतिकता और मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाते हैं।
- ये आंदोलन किशोरों को सामाजिक न्याय, समानता, और नैतिकता के महत्व को समझने और उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

6. विपरीत परिस्थितियाँ और संघर्षः

- विपरीत परिस्थितियाँ और संघर्ष भी किशोरों की नैतिकता और मूल्य विकास में भूमिका निभाते हैं। कठिनाइयों का सामना करने और उनके समाधान के प्रयास से किशोरों में सहानुभूति, धैर्य, और नैतिकता की भावना विकसित होती है।
- संघर्ष और चुनौतियाँ किशोरों को नैतिक निर्णय लेने और नैतिक आचरण को अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

उपसंहारः कुल मिलाकर, समाज किशोरों के नैतिक और मूल्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक मान्यताएँ, मित्र मंडली, समुदाय, मीडिया, और सामाजिक घटनाएँ किशोरों की सोच और आचरण पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि समाज किशोरों के नैतिक और मूल्यवान विकास के लिए सकारात्मक और सहायक वातावरण प्रदान करे, ताकि वे नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

निष्कर्ष

किशोरों में मूल्य और नैतिकता का विकास एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो परिवार, शिक्षा, और समाज के विभिन्न घटकों द्वारा प्रभावित होती है। परिवार बच्चों के पहले शिक्षक होते हैं और उनके नैतिकता के मूल आधार का निर्माण करते हैं। शिक्षा प्रणाली, शिक्षक, और पाठ्यक्रम नैतिक और मूल्यवान आचरण को सिखाने और प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, समाज की मान्यताएँ, मित्र मंडली, समुदाय, और मीडिया किशोरों की सोच और दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करते हैं। सामुदायिक सेवा और सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से किशोर सामाजिक जिम्मेदारी और सहानुभूति की भावना को विकसित करते हैं। इस प्रकार, किशोरों के नैतिक और मूल्य विकास के लिए परिवार, शिक्षा, और समाज का समन्वित प्रयास आवश्यक है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि किशोरों को एक सकारात्मक, सहायक, और नैतिक वातावरण मिले, ताकि वे सही और गलत के बीच अंतर कर सकें और नैतिक निर्णय लेने में सक्षम हो सकें। इस प्रक्रिया के माध्यम से, हम एक नैतिक और मूल्यवान समाज का निर्माण कर सकते हैं, जो भविष्य में जिम्मेदार और नैतिक नागरिकों से युक्त हो।

संदर्भ

- डकवर्थ, ए. एल., गेंडलर, टी. एस., और ग्रॉस, जे. जे. (2014)। स्कूली बच्चों में आत्म–नियंत्रण। शैक्षिक मनोवैज्ञानिक, 49(3), 199–217।
- फरिंगटन, सी. ए., रोडरिक, एम., एलेन्सवर्थ, ई., नागाओका, जे., कीज, टी. एस., जॉनसन, डी. डब्ल्यू., और बीचम, एन. ओ. (2012)। किशोरों को शिक्षार्थी बनना सिखाना। स्कूल के प्रदर्शन को आकार देने में गैर–संज्ञानात्मक कारकों की भूमिकाः एक महत्वपूर्ण साहित्य समीक्षा। शिकागो स्कूल अनुसंधान पर शिकागो विश्वविद्यालय संघ।
- ग्लेन, ए.एल., और कनिंघम, जे.ए. (2000)। आत्म–नियंत्रण और भावनाओं और व्यवहारों से इसका संबंध। शैक्षिक मनोविज्ञान समीक्षा, 20(2), 157–176। 4
- हारवेल, एम., और लेब्यू, बी. (2017)। शिक्षा अनुसंधान में एसईएस उपाय के रूप में मुफ्त भोजन के लिए छात्र पात्रता। शैक्षिक शोधकर्ता, 39(2), 120–131।
- मूस, आर.एच., और मूस, बी.एस. (2006)। पारिवारिक सामाजिक वातावरण की टाइपोलॉजी। पारिवारिक प्रक्रिया, 15(4), 357–371।